Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APG–1006

M.A. (Previous) Examination, 2021

RAJASTHANI

Paper - II

(प्राचीन एवं मध्यकालीन गद्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(सगळा सवालां रा पडूत्तर राजस्थानी में ई देवणा है)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सगळा **दस** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **2** अंक अर **50** सबदां मांय देवंणा है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात सवालां मांय सूं किणी **पांच** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **200** सबद अर **8** अंक राखीज्या है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार सवालां मांय सूं कोई **दोय** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **500** सबद अर **20** अंक राखीज्या है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

1. सगळा सवालां रा पडूत्तर लिखौ (सबद सीमा **50** सबद प्रति पडूत्तर) :

   (i) राजस्थानी रै प्राचीन गद्य री कोई दोय विसेसतावां रौ उल्लेख करौ।

   (ii) मध्यकालीन राजस्थानी गद्य प्रमुख रूप सूं किण रूपां में लिखी जियो है ? कोई चार रूप बतावौ।

(iii) अचळदास खींची री वचनिका री कथा किण सूं संबन्धित है ?

(iv) अचळदास खींची री वचनिका री कोई दोय विसेसतावां बतळावौ।

(v) राजस्थानी साहित्य-संग्रह भाग-1 रै प्रकाशक रौ उल्लेख करौ।

(vi) रामदास वेरावत री व़ाल में 'आखड़ी' रौ अरथ बतळावौ।

(vii) 'कुंवरसी सांखयो' एक सुखान्त रचना है कै दुखान्त रचना ?

(viii) जगदेव रै मावीत्र रौ नांव बतळावौ।

(ix) जगदेव री प्रसिद्धि क्यूं ही ?

(x) 'कुंवरसी सांखलो' रचना में वीढू कुण है ?

खण्ड–ब प्रत्येक 8

किणी **पांच** सवालां रा पड़ूत्तर लिखौ (सबद सीमा **200** सबद) :

2. मुहतां नैणसी री ख्यात रौ परिचै दिरावौ।

3. भरमल रै चरित्र री कोई च्यार विसेसतावां रौ बखांण करौ।

4. प्रसंग समेत व्याख्या करो–

इसउ हिंदू राजा उपकंठि कणउ छइ जिकई मन पातिसाह को रीस बस्त्री, कडण का माथा तइं खिसी ? कउण हर दई रुठड ? कउण को माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ? आजु तइ सोम सातल कान्हड़ दे नहीं, तिलक छपरि तउ गहिलडत नहीं सीहउरि रहकु नहीं, हठ-कउ राड हमीर आथम्पड। अडर पातिसाह हुआ आगिलेरा, अर भला-भलेरा। त्यां तड चउरासी द्रुग लिया था दिहाड़इ पाड़इ।

5. ऊगतो सूरज,

पाबासररो हांस,

कुंवरांवत कुंवर

जनहरजबाघ भोगी भंवर;

कस्तूरियो म्रिघ,

लांघियो सिंघ;

सीळ गंगेव,

दुरजोधन अहमेव;

जुजठल ज्यूं साच,

दुरवासा वाच;

ग्यान रो गोरख,

सहदेव ज्यूं समी वात समरथ;

6. वीठू कवल न चूकजै, लगी जीव कै लार।

विमदाइ नहीं वीक्षरै, केवल प्राण अधार॥

वीठू सज्जन मन वस्या, जांह सूं लागो चित्त।

सो ई घड़ी सुक्यारथी, जाय मिली जै मित्त॥

वीठू इण गोरी तणा, केहा करुं बखांण।

कळ में अवर न कामणी, मीने बादल मांण॥

7. इस भांति दिन साल बीता। चामंडरे अखाड़े कालो भैरुं नावै। तरै जाणियो हमेसा बरजा ना पाटण जगदेवदिसाँ जाये मती, पिण रहतो नहीं, षोड़ो हुयो बंध मांहे पड़ियो है। तद काला भैरुँ छुड़ावण नै मिनख लोक आय भाटण रो रूप करि आई। तिका काली, डीगी, मोटा दांत, दूबली घणी डरावणी माथारा लटा बिखारिया, घणां तेल मांहे चवती, धकल केस माथै, लिलाड सिंदूर थेथड़ियो थकों, लोवड़ी काळी कालो धाबरो कांचळी तेल मांहें भरकाब थकी, उघाडै माथै कीघां, हाथ मांहे त्रिसूल झालियां दरबार आईं।

8. नीगमउ मनि माहि भाई घरि भोजा तणइ।

प्रजा कीध मन पाधरा मरण देखि मरि वाह॥

बाप इता बिरदैत छलि धरि कुळी छत्तीस सहि।

चाल्या स्वामि समाणसा सड माणास साखेत॥

अेक पाल्हा की पूठि पूठि अेक पातळ तणी।

ओलिगाणा आगि हुवा अति दिन बैला ऊठि॥

खण्ड–स

प्रत्येक 20

किणी दोय सवा़लां रा जवा़ब लिखौ (सबद सीव **500** सबद प्रति जवाब) :

9. 'अचलदास खींची री वचनिका' नैं आधार मान र रचनाकार शिवदास गाउण री गद्यशैली रौ बखांण करौ।

10. राजस्थानी वर्णक गद्य साहित्य रौ परिचै देवतां थकां 'राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग-1' में संकलित रचनाकं री विसेस्तावां रौ खुलासौ करौ।

11. 'कुवरसी सांखलो' रचना में मंडीजी मध्यकालीन सामाजिक अर सांस्क्रति परम्परावां रौ वखांण करौ।

12. 'जग देव पंवार री वात' री विरोळ करौ।